रात्रि सभा 31-7-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बच्चों को मालूम है यह बाबा है। कोई गुरु गुसाई = नहीं हैं। और सभी तरफ हैं गुरु। भक्तिमार्ग में अक्सर गुरु होते हैं। यह तो बेहद का बाप फिर वही टीचर है। वही सदगुरु भी है। बच्चे जानते हैं बाप आते ही हैं नई दुनिया स्थापन करने। बच्चे भी कहते हैं बाबा हम हर 5000 वर्ष बाद आते हैं। आप से वरसा लेने। माया फिर हरा देती है। यह है नई बात। बाप है ही सत्य। सत्य है सत्य बोलते हैं। इतना जानते हैं वह सच्च खण्ड की स्थापना करते हैं। ग्रन्थ में भी है। ऊंच ते ऊंच भगवान है, वह ज्ञान का सागर है। बेहद के बाप से बेहद का वरसा ही मिलता है। इतना समझाते हैं फिर भी भक्ति। भक्ति मार्ग के लोग छोड़ते नहीं। गुरु2 करते रहते हैं। यहां मुसीबत है पवित्र रहना पड़े और बेहद का सन्यास है। सिवाय बाप के और कोई याद न करना है। मनुष्य समझ नहीं सकते हैं। कहते भी हैं ऊंच ते ऊंच भगवान। परन्तु अन्दर अक्ल नहीं निकलता है। परमपिता है तो जरूर परमधाम का रास्ता बतावेंगे। और बाप से वरसा भी मिलेगा। भक्ति मार्ग में निर्धन नास्तिक बन पड़ते हैं। बाप से वरसा लेने कब धक्का खाना पड़ता है क्या। यह भी बाप है। घर में बैठे बाप को याद करते हैं तो विकर्म विनाश हो। यह बातें कोई शास्त्र में नहीं हैं। बाप सम्मुख समझाते हैं मामेकं याद करो। स्टुडन्ट पढ़ते रहते हैं। जब तक टीचर को भूल नहीं सकते। एम आबजेक्ट है तो पढ़ना चाहिए ना। दैवी गुण भी धारण करना है। भक्ति मार्ग में सुधरते नहीं और ही बिगरते हैं। कैरेक्टर्स खराब हैं। बड़े सुधरे तब बच्चों का भी कल्याण हो। बाकी बाप समझाते हैं भक्ति मार्ग में गुरुओं ने तुम्हारे सभी पैसे खलास कर दिये हैं। मंदिर आदि कितना बनाते हैं। गवर्मेन्ट भी मदद करती है। गवर्मेन्ट न रीलिजस है न अनरीलीजस है। परन्तु ड्रामा के प्लैन अनुसार धर्म को ही भूल गये हैं। तो न इधर के न उधर के रहे। अभी तुम बच्चे होशियार हो गांवों में जाकर सभी गरीबों का कल्याण करो। देखना है हम औरों की सेवा करते हैं। नहीं तो लज्जा आनी चाहिए हम बाबा का वन सेवा नहीं करते तो बाबा का बनकर क्या किया। पद भी नहीं पा सकेंगे। बाबा सदैव कहते हैं ज्ञान उठाना अच्छा है। फिर भी साहुकार बनना है अच्छा है। दास दासियां बनने से साहुकार बनना अच्छा। नहीं तो राजाएं भी साहुकार से कर्ज उठाते हैं। क्योंकि उनके पास धन बहुत होता है। दान करते हैं तो साहुकार बनते हैं। यहां फिर ज्ञान योग काम आता है। वह भी नहीं तो बाकी क्या। बाबा फिर भी पुरुषार्थ कराते हैं। समझ जाते हैं हमारे तकदीर में नहीं है। हम से पुरुषार्थ नहीं होता है। रावण के जेल में जन्म जन्मांतर के कैदी हैं। छूटने नहीं चाहते हैं। अभी पता पड़ा है हम रावण के कैदी है। डिस रेसपेक्ट हो गये हैं। अभी माया पर हम जीत पाकर रेसपेक्ट लेना चाहते हैं। बाप कहते हैं कल्प2 की बाजी है। जितना पुरुषार्थ उतना ही फायदा है। नहीं तो कल्प कल्पान्तर फेल होंगे। यह बाप दादा दोनों ही समझाते हैं स्थापना होनी ही है। फिक्र क्या करें। बाप आते हैं बच्चों को फिक्र रहित बनाने। नजर से निहाल ... सद्गुरु के निन्दक ठौर न पाये। बाप खुद कहते हैं तुम ने जो भक्ति की है शास्त्रों का भूसा जो बुद्धि में है वह छोड़ दो। अभी मैं जो सुनाता हूं वह सुनो। और सभी भूल जाओ। मामेकं याद करो। मेरे से सुनो। मेरी श्रीमत पर चलेंगे तो यह सभी पाप नाश हो जावेंगे। बाप को याद करना है बहुत। बच्चे लिखते हैं बाबा माया को थमा दो। बहुत तंग करती है। बाप कहते है महावीर वह जो जीत पाये। महावीर बन्दर को भी कहते हैं। उनको फिर पूजते हैं। अभी तुम बच्चों को बन्दर लगता है। बन्दर कोई देवता थोड़े ही है। जो पूजा करते है। बन्दर है सभी जनावरों से विकारी। खौफनाक भी होता है। अभी यह बम्स आदि बना रहे हैं। यह है खूनी नाहक। बिगर कोई दोष मारा जाता। प्रजा मारी जाती है बिगर दोष। यह भी खेल है जो बाप समझाते हैं। पिछाड़ी में खूनी नाहक का खेल बनाते हैं। हाहाकार के बाद होती है जयजयकार। तुम बेहद के मालिक बनते हो। बेहद का हाहाकार फिर बेहद का जयजयकार होती है। गुरुओं के जंजीर भी बड़े कड़े हैं। बहुत मुश्किल छोड़ते हैं। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग नाईट और नमस्ते।

*::***मन्मनाभव***::*